रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ८: अधिकार (हक़दारी)

‘अधिकार’ , ‘हक़दारी’ , आदिकाल से लगातार आबाद रहे शहर में बराबरी के आलंबरदार का जिज्ञासुओं, साधकों और विद्वानों के साथ विचारोत्तेज़क गोष्ट। जिस शहर में गंगा नदी कोहनी मोड़ मुड़ती है, गुरु नानक नाबराबरी के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते हैं। यह उन संतों को भी सजदा है जो गुरु नानक के साथ इंक़लाबी फ़लसफ़ा साझा करते हैं।

निज घरि बैस सहज घर लहीऐ ॥
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

जब मनुष्य अपने भीतर वास कर लेता है
तो सहज का अनुभव होता है।
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

गुरु नानक कहते हैं कि अपनी सोच के अवलोकन और पड़चोल से चेतना का स्रोत बढ़ता-फलता है।

प्रयागराज के झूसी इलाके से गुरु नानक और भाई मरदाना ने गंगा नदी के किनारे एक कच्ची राह पर वाराणसी के लिये अपना सफ़र शुरू किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर हम अब प्रयागराज से वाराणसी जा रहे हैं।

हिंदू ग्रंथों में वाराणसी को सबसे पवित्र स्थानों में शामिल किया गया है जिसे बनारस भी कहा जाता है। यह उन पुराने शहरों में से एक है जो लगातार आबाद रहे हैं। इतिहास में यह काशी के नाम से भी दर्ज है, जहां भगवान शिव को समर्पित काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शनों के लिये, भक्त काफी समय पहले से आते रहे हैं।

हम सबसे पहले 'घाट' पर जा रहे हैं जो गंगा नदी का किनारा है।

इस शहर में तकरीबन अट्ठासी मान्यता प्राप्त घाट हैं जो मज़हबी कर्मकांड करने के लिये जाने जाते हैं। वाराणसी फ़लसफ़े के विभिन्न धाराओं के लोगों को आकर्षित करता रहा है।

संतों और विद्वानों के साथ गोष्ठी करने के इरादे से गुरु नानक वाराणसी आये थे।

लोगों को गंगा में कर्मकांड के तौर पर स्नान करते देख गुरु नानक ने गाया,

गंग बनारस सिफत तुमारी नावै आतम राउ ॥
सचा नावण ताँ थीऐ जाँ अहिनिस लागै भाउ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

जहां सृजनहार के गुणों की परछाई पड़ती है, वहीं मेरा बनारस (वाराणसी) और मेरी गंगा है जहां मेरी आत्मा पवित्र स्नान करती है।
सच्चा स्नान तब होता है जब मानवता का सम्मान होता है।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक के लिये तीर्थ स्थान पर बाहरी सफ़ाई के कर्मकांडों से ज़्यादा अहम आत्म-चिंतन था।

गंगा के किनारे बैठकर गुरु नानक ने देखा कि घाट पर कई तरह की गतिविधियाँ हो रही हैं। आलिम ग्रंथ पढ़ रहे थे। शिष्य उपदेश सुन रहे थे। साधक ध्यान कर रहे थे। फ़कीर नतमस्तक थे। अघोरी मसाण में बैठे थे। लोगों की अज्ञानता से हैरान होकर गुरु नानक ने गाया,

दुबिधा न पड़उ हर बिन होर न पूजउ मड़ै मसाण न जाई ॥
तृसना राच न पर घर जावा तृसना नाम बुझाई ॥
घर भीतर घर गुरू दिखाइआ सहज रते मन भाई ॥
(राग सोरठ, गुरु नानक)

दुविधा में ना उलझो। सोच-विचार के बिना किसी की आराधना ना करो। इससे रूहानी मौत नहीं होती। तृष्णा के घेरे में फंस कर सर्जना का बिसमादी पड़ाव हासिल नहीं किया जा सकता। आत्म-मंथन के रास्ते ही लालसाओं से पार पाया जा सकता है।

मैंने अपने अंदर ही अपनी हस्ती का घर बना लिया है जिससे मेरा मन सहज हुआ है।
(राग सोरठ, गुरु नानक)

गुरु नानक का गायन सुनकर बहुत सारे तीर्थ यात्री उनके आसपास एकत्रित हो गये। वह उनके संदेश को समझना चाहते थे। गुरु नानक ने बयान किया कि यह ग़लतफ़हमी है कि बुद्धिरहित मन से कर्मकांड निभा देने से मुक्ति मिल सकती है। केवल आत्मिक इरादे ही फल देते हैं।

गुरु नानक के व्यवहार ने वाराणसी के ब्राह्मण गंगा राम को बहुत प्रभावित किया और वह उनके अनुयायी बन गये। एक अन्य ब्राह्मण चतुर दास ने गुरु नानक के बारे में सवाल किया, वह किस तरह के श्रद्धालु हैं जिनके हाथ में तुलसी की माला नहीं है, ना ही उनके माथे पर चंदन का टीका लगा है, ना ही उनके पास पूजने वाला पत्थर 'सालग्राम' है। पूरे मामले को साफ़ करने के लिये गुरु नानक ने यह सबद गाया,

साल ग्राम बिप पूज मनावहु सुकृत तुलसी माला ॥
राम नाम जप बेड़ा बाँधहु दइआ करहु दइआला ॥
काहे कलरा सिंचहु जनम गवावहु ॥
काची ढहग दिवाल काहे गच लावहु ॥
(राग बसंत हिंडोल, गुरु नानक)

पुजारी 'सालग्राम' की पूजा करते हैं और तुलसी की माला फेरते हैं।
इसके बजाय, सृजना से एकसुर हों दया का बेड़ा बांधने की कोशिशों में शामिल हों और विवेक का दान मांगो।
बंजर भूमि को सींचने रूपी कर्मकांड में जीवन क्यों बर्बाद करना है?
जब यह देह रूपी कच्ची दीवार ने गिरना ही है तो इसे बेमायना इरादों से लीपने की मशक़्क़त क्यों करनी है?
(राग बसंत हिंडोल, गुरु नानक)

प्रचलित कर्मकांड निभाना, खारे बंजर में सिंचाई करने के समान है जिसमें कोई फ़सल नहीं होगी। इसके बजाय व्यक्ति को निःस्वार्थ सेवा, नेक इरादे और दया के कार्यों के माध्यम से अपने आंतरिक परिवर्तन पर ध्यान देना चाहिए। सद्गुणों के अमृत का आनंद लेने और दोषों से मुक्त होने के लिये विचारों को स्पष्ट रखना चाहिए। गुरु नानक ने कहा कि ऐसे कर्मों से ही कोई सच्चा श्रद्धालु बन सकता है।

विद्वानों के साथ गोष्ठी के दौरान गुरु नानक से पूछा गया कि क्या मज़हबी ग्रंथों के विशाल अध्ययन से रूहानी उत्थान हो सकता है। गुरु नानक का उत्तर था; मंत्रों के जाप और ग्रंथों को बग़ैर ध्यान से पढ़ने से सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं होता। इससे तो इंसान का अहंकार बलवान होता है। रूहानी ग्रंथों को व्यवहार में लाने से ही विवेक हासिल किया जा सकता है।

पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥
नानक लेखै इक गल होर हउमै झखणा झाख ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

कोई वर्षों लगातार ग्रंथों का पाठ कर सकता है। कोई महीनों तक पाठ कर सकता है।
कोई ताउम्र पाठ कर सकता है और प्रत्येक साँस के साथ पाठ कर सकता है।
नानक ने कहा कि अंत में यह मायने रखता है कि आप अपने मामलों में कितने सच्चे हैं। इसके बिना बाकी सब बातें अहंकार का इज़हार हैं।
(राग आसा, गुरु नानक)

जब तक हासिल किया ज्ञान मनुष्य के अपने और दूसरों के रूहानी उत्थान का कारण नहीं बन जाता, तब तक यह केवल अपने अहंकार और अहम को दिखाने के लिये शब्दों का ढोंग है।

गुरु नानक के दौर में पुरोहित वर्ग ने पवित्रता और छुआछूत से संबंधित कई रस्मों-रिवाज़ निर्धारित किये हुये थे। ऐसी ही एक रस्म को 'सूतक' कहा जाता था, जो मासिक धर्म के दौरान एक महिला को रसोई, मंदिरों और सामाजिक समारोहों में जाने से मना करती थी। 'सूतक' का अर्थ अशुद्ध होता है। इसी तरह बच्चों को जन्म देने के बाद महिलाओं पर रोकें लगाई जाती थी। इस दस्तूर के पीछे नियत नेक थी क्योंकि महिला के कमज़ोर शरीर को मज़बूती हासिल करने का मौका मिलता था लेकिन दुर्भाग्य से इस रस्म ने सख़्त मज़हबी पाबंदी का रूप ले लिया।

जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥
जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥
सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥

सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

औरत को हर महीने माहवारी आती है समाज उसको जूठा करार देता है।
पर जूठ का वास झूठों की ज़ुबान पर होता है। नतीजे के तौर पर वह बार बार दुःखी होते हैं।
जो अपने शरीर को धोकर पाक होने की रस्म को निभाते हैं वह पवित्र नहीं हो जाते।
नानक ने फ़रमाया कि वह मनुष्य ही पाक हैं जो अपने-आप के साथ सच्चे हैं।
(राग आसा, गुरु नानक)

मनुष्य को जन्म देने की शारीरिक ज़िम्मेदारी प्रकृति ने नारी को दी है जिसके बिना मानव जाति का कोई अस्तित्व नहीं है। गुरु नानक ने मज़हब के नाम पर उन धारणाओं का ज़ोरदार खंडन किया जो दूसरों के साथ भेदभाव करती हैं या दूसरों को नीचा दिखाती हैं। उन्होंने लैंगिक नाबराबरी के ख़िलाफ़ ज़ोरदार आवाज़ उठाई।

हम अब वाराणसी में गंगा किनारे पर पंचगंगा घाट जा रहे हैं। माना जाता है कि यही वह स्थान है जहां भगत रामानंद ने भारतीय फ़लसफ़े का पाठ पढ़ाया था।

यहां भगत रामानंद की याद में बना हुआ छोटा सा मंदिर है।

जानकी जीवन दास: यह श्री मठ अब से सात सौ इक्कीस वर्ष पहले आदि जगत गुरु रामानंद आचार्य जी का तप स्थान था। यहीं कबीर दास जी, रविदास जी, धन्ना जी, पीपा जी, सेन आचार्य जी, यह सभी उनके अमर भक्त थे। उन्होंने उस समय नारा दिया, जाती पाती पूछे नहीं कोई, भगवान का नाम लो, तब भगवान के होंगे। यह उनका मुख्य नारा था। उस समय की जातिगत कट्टरता को उन्होंने राम भगती से दूर किया। उन्होंने बाहरमुखी रास्ता दिखाया। नानक जी भी इस स्थान पर आये थे।

भगत रामानंद का जन्म तेरह सौ छियासठ में हुआ था और उन्हें गंगा पट्टी में 'भक्ति' आंदोलन का संस्थापक माना जाता है। अद्वैतवाद के बारे में उनका विवरण दक्षिण भारत के रामानुज से प्रेरित है जो वेदांत के फ़लसफ़ी थे।

भगत रामानंद के सबद को गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया है। यह सबद इस बात का साक्षी है कि गुरु नानक और उनके फ़लसफ़े आपस में मेल खाते हैं।

भगत रामानंद के समय में जातिगत भेदभाव ने भारतीय समाज की जड़ें कमज़ोर कर दी थीं। उन्होंने निचली जातियों और मुसलमान तबके से जुड़े लोगों को शिष्य बनाकर समाज के नियमों को तोड़ा।

उन्होंने धर्म के मार्ग को मनुष्य के ज्ञान से जोड़ा। भगत रामानंद ने तपस्या और कर्मकांडों का खंडन किया और उन्हें अर्थहीन करार दिया।

गुरु ग्रंथ साहिब में उनका यह सबद शामिल हैं,

सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥
जिन सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥
रामानंद सुआमी रमत ब्रहम ॥
गुर का सबद काटै कोट करम ॥
(राग बसंत हिंडोल, भगत रामानंद जी)

मैं सतगुरु पर कुर्बान हूं।
जिसने मेरी सारी शंकाओं और उलझनों को दूर कर दिया है।
रामानंद ने कहा कि हाज़रा-हज़ूर परमात्मा ही मालिक है।
विश्लेषण के माध्यम से किये गये बुरे कर्मों की समझ पड़ती है।
(राग बसंत हिंडोल, भगत रामानंद जी)

पंचगंगा घाट से लौटकर मैं मणिकर्णिका घाट से होकर गुजर रहा हूँ जो वाराणसी का प्रमुख शमशान है।

पुरानी परंपरा के अनुसार बहुत सारे वृद्ध उम्र के अंतिम पड़ाव पर वाराणसी आते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस शहर में मरने वालों को जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिल जाती है।

मणिकर्णिका घाट पर शमशान घाट का नज़ारा एक व्यक्ति के मन में बेसकूनी भर सकती है।

मेरे मन में सवाल चल रहा है, "क्या वाराणसी में मरने से मुक्ति का रास्ता खुल जाता है?"

सबद मरै फिर मरण न होइ ॥
बिन मूए किउ पूरा होइ ॥
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

विवेक से जुड़ा मनुष्य कभी नहीं मरता।
नकारात्मक दृष्टिकोण की मृत्यु के बिना कोई विवेक कैसे प्राप्त कर सकता है?
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

गुरु नानक के अनुसार शरीर की मृत्यु से नहीं, चेतना की मृत्यु से डरना चाहिये। उनके सबद हमें अपनी मूल पहचान के पथ पर चलने के लिये प्रेरित करते हैं।

गुरु नानक को एक ब्राह्मण ने भोजन पर बुलाया और सम्मान के रूप में सभी मज़हबी कर्मकांड और सामाजिक शिष्टाचार का ख़्याल रखा। चूल्हे और ईंधन को शुद्ध किया। उस ब्राह्मण के आगे सत्य और असत्य के दोहरेपन को प्रकट करने के लिये गुरु नानक ने गायन किया,

जे कर सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतक होइ ॥
गोहे अतै लकड़ी अंदर कीड़ा होइ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

जो कोई झूठ के ख़्याल का कायल है तो चारों तरफ ही खोट का पसारा है।
कीड़े का वास गोबर की गंदगी में भी है और लकड़ी की पवित्रता में भी है
(राग आसा, गुरु नानक)

यदि मज़हबी कर्मकांड से जुड़े मजलिसी शिष्टाचार को सत्य और असत्य का आधार मान लिया जाये तो सारा संसार अशुद्ध है। गुरु नानक ने ऐसा ज्ञान प्राप्त करने पर ज़ोर दिया जो मन से मैल निकाल कर मन को शुद्ध करे।

हम अब वाराणसी के गोवर्धनपुर इलाके में भगत रविदास के 'जन्म स्थान मंदिर' जा रहे हैं।

भगत रविदास का जन्म चौदह सौ चौदह ईस्वी में मोची परिवार में हुआ था जिसे जाति पदानुक्रम में एक अछूत जाति माना जाता है। उन्होंने पुरोहित वर्ग के इस विचार का कड़ा विरोध किया कि मनुष्य के निरंकार के साथ संबंधों में जाति एक बुनिआदी भूमिका निभाती है।

नाम तेरो आसनो नाम तेरो उरसा नाम तेरा केसरो ले छिटकारे ॥
नाम तेरो आरती मजन मुरारे ॥
हर के नाम बिन झूठे सगल पासारे ॥
(भगत रविदास)

ध्यान इबादत का आसन है। ध्यान केसर है जिसका मैंने तेरे ऊपर छिड़काव किया है। ध्यान चंदन की लकड़ी को कूटने वाला पत्थर है।
ध्यान इबादत भी है और पवित्र स्नान भी।
अंतर्ध्यान के बिना बाहरी दिखावे झूठ हैं।
(भगत रविदास)

शिव पूजन दस: मेरा नाम शिव पूजन दास है। मैं बाबा रविदास जी के मंदिर में रहता हूँ। रविदास जी का मतलब था, तोही मोही मोही तोही अंतर कैसा। ऐसा उन्होंने कहा है। आपमें और मुझमें क्या फ़र्क है? अगर तुम पानी की तरंग हो तो मैं पानी की तरंग की लहर हूं।

भगत रविदास सर्जना और सृजनहार में कोई फ़र्क नहीं करते। वह पूरी मानव जाति को एक मानते हैं।

भगत रविदास और गुरु नानक के बीच मुलाकात का कोई सबूत नहीं है, लेकिन इन दोनों में बेख़ौफ़ होने की रमज़ सांझी हैं। दोनों ने बेइंसाफी के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई।

उनके कई सबद गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं। इनमें से एक सबद में वह कहते हैं,

रे चित चेत चेत अचेत ॥
काहे न बालमीकहि देख ॥
किस जात ते किह पदहि अमरिओ राम भगत बिसेख ॥
अजामल पिंगुला लुभत कुँचर गए हरि कै पास ॥

ऐसे दुरमत निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥
(राग केदारा, रविदास)

ओ मेरे अचेत मन, सचेत हो जा।
वाल्मीकि को क्यों नहीं देखते हो?
जो नीची जाति में पैदा होने के बावजूद चेतना के शिख़र को पहुंचे, श्रेष्ठ भक्ति और चिंतन द्वारा।
अजामल, पिंगला, लुभत और कुंचर जैसे अनेक निरंकार में लीन हो गये।
इसी तरह जो नकारात्मक सोचने वाले हैं उनका भी पार-उतारा हो गया।
(राग केदारा, रविदास)

भगत रविदास की महिमा हुई तो कुलीन वर्ग और शाही परिवार के सदस्य भी उनके भक्त बन गये।

पंजाब में, भगत रविदास के अनुयायी गुरु नानक के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुये हैं। ऐतिहासिक रूप से, वह अपने पूजा स्थल में गुरु ग्रंथ साहिब को विराजमान करते थे। हमने अपनी जांच के दौरान देखा कि इस दस्तूर में कटाव होने लगा है।

विभिन्न समुदायों में विभाजित होना समाज की साझी ज़िम्मेदारी है। मुझे लगता है कि हम गुरु नानक और भगत रविदास के वहदत के संदेश को ठीक से पहचानने में नाकामयाब रहे हैं, जिसे उन्होंने वास्तव में प्रदर्शित किया था।

गुरमत पूरा जुग जुग सोई ॥
(राग बसंत, गुरु नानक)

रूहानी विवेक से ही यह समझ आती है कि सदियों से हाज़रा-हज़ूर ही एक ही ताकत है
(राग बसंत, गुरु नानक)

हम अब घाट के नज़दीक गुरुद्वारा गुरु का बाग़ जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: गंगा घाट के नज़दीक, गुरुद्वारा गुरु का बाग़, गुरु नानक के बनारस के घाटों पर आने की याद में बनाया गया है यहां उन्होंने संतों और विद्वानों के साथ गोष्ट रचाया।

गंगा के तट पर ब्राह्मणों के एक समूह ने गुरु नानक से सवाल किया कि ग्रंथों का ज्ञान होना ज़्यादा महत्वपूर्ण है या अभ्यास करने का इरादा महत्वपूर्ण है।

बेद वपारी गिआन रासु करमी पलै होइ ॥
नानक रासी बाहरा लदि न चलिआ कोइ ॥
(राग सारंग, गुरु नानक)

वेद सौदागर है। रूहानी विवेक ही सच्ची पूंजी है जो सच्चे कर्मों से मिलती है।
नानक ने फ़रमाया कि इस पूंजी के बिना बड़ा मुनाफ़ा कोई नहीं कमा सकता।
(राग सारंग, गुरु नानक)

जब ज्ञान पर अच्छे इरादों के साथ अभ्यास किया जाता है, तो यह विवेक का अमृत बन जाता है और रूहानी प्रगति में मदद करता है। यदि ज्ञान का विद्वेषपूर्वक अभ्यास किया जाये तो वह एक घातक विष और रूहानी पतन का कारण बन जाता है।

वाराणसी में विविध पृष्ठभूमि के लोगों के साथ घूमते हुये मुझे महसूस हूआ कि मेरी सोच उस मछली की तरह है जो नदी से परे, विस्तार को समझने की कोशिश करती है।

तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥
जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥

तू दरिया है, तू सब जाणू है और तेरे को सब दिखता है। मैं तो महज़ मछली हूँ मुझे हाज़रा-हज़ूर के फैलाव की गहराई कैसे मिल सकती है?
मेरी नज़र जहां भी जाती है उस तरफ़ वहदत ही नज़र आती है। इस वहदत से बाहर मेरा वज़ूद बिख़र जाता है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ८: अधिकार (हक़दारी)

ये चर्चा संकेतक गुरु नानक की वाराणसी यात्रा के गहरे ऐतिहासिक और दार्शनिक महत्व को उजागर करते हैं। वे भगत रामानंद और भगत रविदास जैसे प्रभावशाली रुहानी सुधारकों के साथ उनके संबंधों को प्रकट करते हैं। दार्शनिक रूप से, वे अनुष्ठानों और बाहरी धार्मिक आडंबर की सतही प्रकृति पर उनकी आलोचना, पवित्रता और रुहानी ज्ञान की उनकी नई परिभाषा, जातिगत भेदभाव को उनकी साहसिक चुनौती और दिव्य के साथ मानव संबंध की उनकी प्रेरणादायक दृष्टि को उजागर करते हैं। सामूहिक रूप से, ये दृष्टिकोण यह समझने का एक ढांचा तैयार करते हैं कि गुरु नानक की वाराणसी यात्रा न केवल सबसे प्रतिष्ठित धार्मिक केंद्रों में से एक में रुहानी संवाद में संलग्न थी, बल्कि उस समय की धार्मिक प्रथाओं को एक गहरी दार्शनिक चुनौती भी प्रस्तुत करती थी। उनकी विरासत हमें नैतिक आचरण, आत्मचिंतन और संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त दिव्य उपस्थिति की पहचान पर आधारित रुहानीता को अपनाने का आह्वान करती है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक के समय में वाराणसी का ऐतिहासिक महत्व क्या था, और उन्होंने इस नगर को यात्रा के लिए क्यों चुना?

एपिसोड वाराणसी को, जिसे बनारस या काशी के नाम से भी जाना जाता है, सबसे प्राचीन निरंतर बसे हुए नगरों में से एक के रूप में वर्णित करता है, जिसे हिंदू ग्रंथों में पवित्रतम स्थानों में से एक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था। यह अनादिकाल से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता रहा, जो भगवान शिव को समर्पित काशी विश्वनाथ मंदिर में श्रद्धा अर्पित करने आते थे। एपिसोड में उल्लेख है कि इस नगर में लगभग ८८ नामित 'घाट' हैं, जो विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के लिए प्रसिद्ध हैं और विविध दार्शनिक दृष्टिकोणों वाले लोगों को आकर्षित करते रहे हैं। विशेष रूप से, एपिसोड बताता है कि गुरु नानक ने संतों और विद्वानों के साथ संवाद करने के लिए वाराणसी की यात्रा की थी। गुरु नानक ने स्थापित धार्मिक केंद्रों और विद्वानों के समुदायों के साथ अपने संवादों के दौरान समानता और सामाजिक सुधार का रुहानी संदेश कैसे फैलाया? इस प्राचीन शिक्षा और अनुष्ठानिक परंपरा के केंद्र में उन्होंने किन उद्देश्यों की पूर्ति की आशा की होगी?

२. वाराणसी के ब्राह्मणों और विद्वानों ने गुरु नानक के विचारों पर कैसी प्रतिक्रिया दी, और इन संवादों से उस काल के धार्मिक विमर्श के बारे में क्या पता चलता है?

एपिसोड में ब्राह्मण समुदाय के साथ कई महत्वपूर्ण संवादों का उल्लेख किया गया है। इसमें बताया गया है कि गंगा राम, जो वाराणसी के एक उच्च जाति के ब्राह्मण थे, गुरु नानक के आचरण से अत्यधिक प्रभावित हुए और उनके अनुयायी बन गए। इसके विपरीत, चतुर दास, जो एक अन्य उच्च जाति के ब्राह्मण थे, ने प्रश्न किया कि गुरु नानक किस प्रकार के भक्त थे, क्योंकि उन्होंने तुलसी की माला नहीं धारण की थी, न ही माथे पर चंदन का तिलक लगाया था, और न ही 'शालिग्राम' नामक पत्थर रखा था। एक ब्राह्मण ने गुरु नानक को भोजन के लिए आमंत्रित किया और सम्मानपूर्वक धार्मिक अनुष्ठानों के अनुसार चूल्हे और जलावन की शुद्धि का पूरा ध्यान रखा। इसके अतिरिक्त, विद्वानों ने गुरु नानक से संवाद किया और पूछा कि क्या धार्मिक ग्रंथों के गहन अध्ययन से रुहानी उत्थान प्राप्त किया जा सकता है। ये विविध संवाद पारंपरिक धार्मिक संस्थानों में गुरु नानक के क्रांतिकारी विचारों की स्वीकृति के बारे में क्या संकेत देते हैं, और संभावित प्रतिरोध के बावजूद उनके संवाद शैली ने उनके संदेश को संप्रेषित करने में कैसे सहायता की?

३. गुरु नानक और उनके समकालीन प्रभावशाली रुहानी व्यक्तित्वों के बीच ऐतिहासिक संबंधों का क्या प्रमाण उपलब्ध है?

एपिसोड में यह प्रमाणित नहीं किया गया है कि गुरु नानक और अन्य रुहानी व्यक्तित्वों की प्रत्यक्ष मुलाकात हुई थी, लेकिन उनके विचारों के दार्शनिक संबंधों को 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित सबदों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। भगत रामानंद के संदर्भ में, एपिसोड बताता है कि 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भगत रामानंद का सबद सम्मिलित किया गया है, जो उनकी और गुरु नानक की विचारधारा में समानता का प्रमाण है। इसी प्रकार, भगत रविदास के बारे में कहा गया है कि इस बात का कोई दस्तावेजी प्रमाण नहीं है कि भगत रविदास और गुरु नानक प्रत्यक्ष रूप से मिले थे, परंतु वे निर्भीकता के गुण में समान थे और भगत रविदास के सबद भी 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित हैं। विभिन्न परंपराओं में रुहानी ज्ञान के प्रति गुरु नानक के दृष्टिकोण को इन व्यक्तित्वों के लेखन के समावेश से क्या संकेत मिलता है, और इस समावेश ने उभरती हुई सिख परंपरा की समावेशी प्रकृति को कैसे आकार दिया?

४. जातिगत भेदभाव की सामाजिक पृष्ठभूमि ने गुरु नानक और उनके समकालीनों के रुहानी संदेशों को कैसे प्रभावित किया?

एपिसोड इस काल में जातिगत भेदभाव की महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि प्रदान करता है। इसमें कहा गया है कि भगत रामानंद के समय में जातिगत विभाजन ने संपूर्ण भारतीय समाज की नींव को कमजोर कर दिया

था। उन्होंने निम्न जातियों और मुस्लिम धर्म के अनुयायियों को शिष्य बनाकर सामाजिक नियमों को तोड़ा। भगत रविदास, जिनका जन्म १४१४ ईस्वी में वाराणसी में हुआ था, मोची परिवार में जन्मे थे, जिसे निम्न जाति और अछूत माना जाता था। उन्होंने खुले रूप से उस पुजारी वर्ग की अवधारणा का विरोध किया, जो यह दावा करता था कि जाति किसी व्यक्ति के ईश्वर के साथ संबंध में एक मौलिक भूमिका निभाती है। गुरु नानक ने धर्म के नाम पर होने वाले ऐसे आचरणों की निंदा की, जो भेदभाव और अपमान को बढ़ावा देते थे। उन्होंने जोरदार तरीके से लैंगिक असमानता के विरुद्ध आवाज उठाई। जातिगत भेदभाव को चुनौती देने पर दिया गया यह समान जोर धार्मिक सुधार आंदोलनों की नींव कैसे बना, और इन व्यक्तित्वों ने इस चुनौती का सामना अपनी अनूठी शैली में कैसे किया?

५. वाराणसी में कौन-कौन से स्मारक स्थल गुरु नानक की यात्रा की स्मृति को संरक्षित रखते हैं, और वे उनकी यात्रा के ऐतिहासिक प्रभाव के बारे में क्या बताते हैं?

एपिसोड में गुरुद्वारा गुरु का बाग का उल्लेख किया गया है, जो 'घाटों' के समीप स्थित है और इसे गुरु नानक की बनारस के 'घाटों' की यात्रा को समर्पित बताया गया है, जहां उन्होंने विभिन्न रुहानी व्यक्तित्वों के साथ संवाद किया था। यह गुरुद्वारा विशेष रूप से गंगा नदी के किनारे स्थित बताया गया है। इस स्मारक स्थल की स्थापना और रखरखाव गुरु नानक की वाराणसी यात्रा के स्थायी प्रभाव के बारे में क्या संकेत देता है? यह उन व्यापक स्थलों से कैसे संबंधित है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में उनकी व्यापक यात्राओं की स्मृति को संरक्षित रखते हैं?

६. समय के साथ भगत रविदास और गुरु नानक के अनुयायियों के बीच ऐतिहासिक संबंध कैसे विकसित हुए?

एपिसोड बताता है कि पंजाब में भगत रविदास के अनुयायी गुरु नानक के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। ऐतिहासिक रूप से, वे अपने पूजा स्थलों में 'गुरु ग्रंथ साहिब' का प्रतिष्ठापन करते थे। हालांकि, कथावाचक यह उल्लेख करता है कि अपने अध्ययन के दौरान उन्होंने देखा कि यह परंपरा धीरे-धीरे कम होती जा रही है। समुदायों के बीच विभाजन समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। कथावाचक यह चिंतन करता है कि हम गुरु नानक और भगत रविदास द्वारा अपनाई गई सार्वभौमिकता की भावना को आत्मसात करने में असफल रहे हैं। इन दो समुदायों के बीच इस ऐतिहासिक संबंध का कारण क्या हो सकता है, और समकालीन समय में इस संबंध के कमजोर होने में कौन-कौन से कारक योगदान दे सकते हैं?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. **गुरु नानक गंगा में अनुष्ठानिक स्नान की प्रथा की तुलना में रुहानी शुद्धिकरण की अवधारणा को कैसे पुनर्परिभाषित करते हैं?**

एपिसोड में वर्णन किया गया है कि जब गुरु नानक ने लोगों को गंगा नदी में अनुष्ठानिक स्नान करते हुए देखा, तो उन्होंने एक सबद में यह संदेश दिया कि सृष्टिकर्ता के गुणों का चिंतन ही उनके लिए बनारस (वाराणसी) में गंगा है, जहाँ उनकी आत्मा पवित्र स्नान करती है। सच्चा शुद्धिकरण तब होता है जब मानवता के प्रति निरंतर संवेदनशीलता बनी रहती है। एपिसोड समझाता है कि गुरु नानक के लिए आत्मचिंतन तीर्थस्थलों पर बाहरी शुद्धि के अनुष्ठानों से अधिक महत्वपूर्ण था। जब तीर्थयात्री उनके चारों ओर एकत्र हुए, तो उन्होंने समझाया कि यह एक भ्रांति है कि मात्र व्यर्थ अनुष्ठानों का बाहरी पालन करने से मुक्ति प्राप्त हो सकती है। केवल आंतरिक प्रेरणाएँ ही फलदायी होती हैं। यह दार्शनिक पुनर्परिभाषा बाहरी कर्मकांड से आंतरिक प्रक्रिया के रूप में शुद्धिकरण की समझ को कैसे परिवर्तित करती है, और इसका रुहानी अभ्यास पर व्यापक रूप से क्या प्रभाव पड़ सकता है?

२. **गुरु नानक की अनुष्ठानिक शुद्धता और अशुद्धता की अवधारणा पर दार्शनिक आलोचना क्या है?**

एपिसोड गुरु नानक की अनुष्ठानिक शुद्धता की अवधारणा पर प्रतिक्रिया को उनके सबद के माध्यम से प्रस्तुत करता है, जिसमें वे बताते हैं कि यदि कोई अशुद्धता में विश्वास करता है, तो अशुद्धता हर स्थान पर व्याप्त है। यह प्रतिक्रिया एक ब्राह्मण को दी गई थी, जो भोजन पकाने के लिए चूल्हे और जलावन की धार्मिक अनुष्ठानिक शुद्धता बनाए रखने का विशेष ध्यान रखता था। एपिसोड में गुरु नानक द्वारा 'सूतक' की प्रथा की भी आलोचना का उल्लेख किया गया है, जिसमें मासिक धर्म के दौरान महिलाओं को अशुद्ध माना जाता था। समाज एक महिला को केवल इसलिए अशुद्ध मानता है क्योंकि उसे मासिक धर्म होता है। जबकि वास्तविक अशुद्धता झूठ बोलने वाले के मुख में होती है, जो उन्हें अपमानजनक बना देती है। शुद्ध वे नहीं हैं जो केवल अपने शरीर को धोकर स्वयं को पवित्र करने का प्रयास करते हैं, बल्कि वे हैं जो स्वयं के प्रति सच्चे बने रहते हैं। यह दार्शनिक दृष्टिकोण अनुष्ठानिक शुद्धता से नैतिक शुद्धता की ओर ध्यान केंद्रित कैसे करता है, और इसका लैंगिक असमानता और सामाजिक भेदभाव को संबोधित करने पर क्या प्रभाव हो सकता है?

३. **गुरु नानक का धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन के महत्व पर क्या दृष्टिकोण है, यदि उनका ज्ञान आंतरिक रूप से आत्मसात न किया जाए?**

जब विद्वानों ने पूछा कि क्या धार्मिक ग्रंथों का व्यापक अध्ययन रुहानी उत्थान की ओर ले जा सकता है, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि कोई व्यक्ति वर्ष दर वर्ष, महीना दर महीना, जीवनभर, प्रत्येक श्वास के साथ ग्रंथों का अध्ययन कर सकता है। धर्म का पालन ही एकमात्र महत्वपूर्ण कार्य है; बाकी सब कुछ अहंकार में जड़ित केवल बातें हैं। एपिसोड इस बात पर जोर देता है कि जब तक अर्जित ज्ञान व्यक्ति और अन्य लोगों के रुहानी उत्थान में योगदान नहीं देता, तब तक वह केवल गर्व और दंभ से उपजी निरर्थक बातें ही होती हैं। बाद में, जब पूछा गया कि धार्मिक ग्रंथों का ज्ञान अधिक महत्वपूर्ण है या कर्मों की मंशा, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि ग्रंथ व्यापारी के समान होते हैं। रुहानी ज्ञान ही वह वास्तविक पूँजी है, जो धर्मपरायण कर्मों के माध्यम से अर्जित की जाती है। इस पूँजी के अतिरिक्त, कोई अन्य प्रयास सच्चा लाभ प्रदान नहीं कर सकता। यह दार्शनिक आलोचना पारंपरिक रूप से धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन की पद्धति को कैसे चुनौती देती है, और पवित्र ज्ञान के साथ गुरु नानक का वैकल्पिक संबंध क्या प्रस्तावित करता है?

४. मृत्यु के विषय में गुरु नानक का दृष्टिकोण वाराणसी में मृत्यु के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति की पारंपरिक मान्यता को कैसे चुनौती देता है?

एपिसोड एक प्राचीन परंपरा की चर्चा करता है, जिसमें अनेक वृद्ध व्यक्ति जीवन के अंतिम समय में वाराणसी में बस जाते हैं, इस विश्वास के साथ कि इस नगर में मृत्यु प्राप्त करने से जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिलती है। इस प्रश्न के उत्तर में कि क्या वाराणसी में मृत्यु मोक्ष प्राप्ति का मार्ग हो सकती है, एपिसोड गुरु नानक के एक सबद का उल्लेख करता है, जिसमें वे बताते हैं कि जो ज्ञान को आत्मसात कर लेते हैं, वे कभी वास्तविक रूप से नहीं मरते। यह समझाता है कि गुरु नानक के लिए शरीर की मृत्यु नहीं, बल्कि चेतना की मृत्यु अधिक भयावह है। यह दार्शनिक दृष्टिकोण मृत्यु और मोक्ष की समझ को भौतिक से रुहानी रूप में कैसे परिवर्तित करता है, और इसका प्रभाव इस बात पर क्या पड़ता है कि किसी को कहाँ मरना चाहिए की बजाय, कैसे जीना चाहिए?

५. गुरु नानक और भगत रविदास अपने दार्शनिक संदेशों के माध्यम से जाति-आधारित भेदभाव को कैसे चुनौती देते हैं?

एपिसोड भगत रविदास के उस सबद को प्रस्तुत करता है जो सीधे जाति-आधारित भेदभाव को चुनौती देता है। यह मन को चिंतन का अभ्यास करने का निर्देश देता है ताकि वह अचेतन अवस्था से चेतन अवस्था में आ सके। वे आगे प्रश्न करते हैं कि यदि नकारात्मक मानसिकता वाले लोग मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं, तो तुम मुक्ति क्यों नहीं पा सकते? एपिसोड यह भी उल्लेख करता है कि भगत रविदास की आत्मा इतनी प्रेरणादायक थी कि उच्च वर्ग और राजपरिवारों के कई लोगों ने उन्हें अपना गुरु स्वीकार

किया। इसी प्रकार, गुरु नानक ने निर्भीकता से उन धार्मिक परंपराओं की निंदा की जो भेदभाव और अपमान को बढ़ावा देती थीं और उन्होंने लैंगिक असमानता के विरुद्ध भी प्रबल स्वर उठाया। ये दार्शनिक व्याख्याएँ जन्म आधारित सामाजिक श्रेणियों को चुनौती देने के लिए किस प्रकार एक आधार प्रदान करती हैं, और वे मानव मूल्य और रुहानी सामर्थ्य की क्या वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करती हैं?

६. गुरु नानक, भगत रविदास और भगत रामानंद के बीच कौन-कौन सी दार्शनिक समानताएँ मौजूद हैं?

एपिसोड में कई साझा दार्शनिक दृष्टिकोणों का वर्णन किया गया है। भगत रामानंद, भगत रविदास और गुरु नानक के सिद्धांत अद्वैतवाद (मोनिज़्म) की अवधारणा की नींव रखते हैं, जो एकता पर बल देता है। भगत रामानंद ने कठोर तपस्या और अनुष्ठानों को अर्थहीन मानते हुए अस्वीकार कर दिया। भगत रविदास ने सृष्टिकर्ता और सृष्टि के बीच किसी भी भेद को नकार दिया, जिससे उन्हें समस्त मानव जाति को एक रूप में देखने की दृष्टि प्राप्त हुई। वहीं, गुरु नानक ने अन्याय की निर्भीकता से आलोचना की और सभी को इसके विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरित किया, क्योंकि वे प्रत्येक व्यक्ति को एक एकीकृत शक्ति का ही विस्तार मानते थे। ये दार्शनिक समानताएँ किस प्रकार मध्यकालीन भारत में व्यापक रुहानी प्रवाह को दर्शाती हैं, और गुरु नानक को इन विविध विचारधाराओं को सिख परंपरा में सम्मिलित करने के लिए किसने प्रेरित किया हो सकता है?

७. गुरु नानक मछली और नदी के रूपक के माध्यम से अपने दिव्य संबंध को कैसे व्यक्त करते हैं?

एपिसोड का समापन गुरु नानक के एक सबद के साथ होता है, जिसमें वे सर्वव्यापक शक्ति से संवाद करते हुए इसे नदी के रूप में वर्णित करते हैं, जो सर्वज्ञ और सर्वदर्शी है, और स्वयं को मछली के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो इस सर्वव्यापक सत्ता की सीमाओं को समझने में असमर्थ है। वे कहते हैं कि जिस भी दिशा में वे देखते हैं, उन्हें इसकी उपस्थिति का आभास होता है। यदि वे इस एकता से अलग हो जाएँ, तो वे अवश्य ही बिखर जाएँगे और नष्ट हो जाएँगे। यह मार्मिक चिंतन तब प्रकट होता है जब कथावाचक वाराणसी में विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों के साथ संवाद करने के अनुभव को साझा करता है, और इसे एक मछली के उस प्रयास से जोड़ता है जो अपनी नदी के परे के विशाल अस्तित्व को समझने का प्रयास कर रही हो। यह रूपक गुरु नानक की ईश्वर-मानव संबंध की धारणा को कैसे स्पष्ट करता है, और यह मनुष्य की ईश्वर को समझने की सीमाओं के बारे में क्या संकेत देता है, जबकि यह सृष्टि के प्रत्येक कण में ईश्वर की व्यापकता को भी उजागर करता है?